

वर्तमान समय में लखनऊ शहर के किशोरों के समक्ष उत्पन्न चुनौतियाँ एवं समाधान का अध्ययन

प्रभा श्रीवास्तव, शोध छात्रा, शिक्षा विभाग, स्वामी विवेकानन्द विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश
डॉ. जी पी मिश्रा, एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, स्वामी विवेकानन्द विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश

सारांश

चुनौती व्यक्तिगत, संगठनात्मक और सामाजिक जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा है। हम सभी अपने जीवन, समूह संगठन और समाज में किसी न किसी प्रकार के चुनौती का अनुभव करते हैं, प्रतिस्पर्धा, मूल्यों में अंतर, दृष्टिकोण, अनुभव, लक्ष्य और सीमित संसाधनों की धारणा के कारण चुनौती उत्पन्न होते हैं। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य वर्तमान समय में लखनऊ शहर के किशोरों के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों एवं उसके समाधान का अध्ययन करना है। इस अध्ययन के निष्कर्ष के अनुसार अधिकतम लोगों का मानना है कि चुनौतियों से मनोशारीरिक संतुलन पूर्णरूप से बिगड़ जाता है। जिसके कारण चुनौतियों का स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। किशोर और किशोरियों की प्रसन्नता के लिए संयुक्त परिवार सबसे ज्यादा उपयुक्त होता है, जब किशोरावस्था में डिप्रेशन आता है तब किशोर और किशोरियों आत्मविश्वास की कमी महसूस करते हैं ऐसे में संयुक्त परिवार बहुत ही सहायक होते हैं।

परिचय

किशोरावस्था और युवावस्था, हाई स्कूल जीवन और कॉलेज जीवन ऐसे समय हैं जिन्हें हम पुरानी यादों के साथ देखते हैं। हो सकता है कि हम पर अध्ययन करने और अपना करियर बनाने के लिए दबाव डाला गया हो, लेकिन हम अपने आसपास की दुनिया की अपनी नई धारणाओं में भी तल्लीन थे। साथ ही हमें आधार के प्रलोभनों पर काबू पाना था और आगे बढ़ना था। प्रारंभिक वयस्कता और देर से किशोरावस्था के कई विवरण पेश किए गए हैं। इनमें से सबसे प्रमुख एरिकसन (इलियट, 2000) का है। एरिकसन (इलियट, 2000) द्वारा प्रतिपादित जीवन के सात चरणों में से किशोरावस्था और युवा वयस्कता के चरणों को भूमिका भ्रम और अंतरंगता और एकजुटता के मुद्दों की विशेषता है। इस अवस्था में किशोर अपनी पहचान स्थापित करने का प्रयास करते हैं और स्वयं को अद्वितीय व्यक्तियों के रूप में देखते हैं। वे परिवार के बाहर दूसरों के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित करने की राह पर भी हैं। व्यक्तित्व में यह बदलाव माता-पिता को भ्रमित कर सकता है। जो माता-पिता अपने छोटे बच्चों की सनक के आदी थे, अब उन्हें अपने नवोदित वयस्क बच्चों की सनक का सामना करना पड़ रहा है। युवा वयस्क, जब उनके दृष्टिकोण और गतिविधियों में विफल हो जाते हैं, वे भ्रमित और विवादित भी होते हैं। इस प्रकार परिवार में वैमनस्य के बीज बोए जाते हैं।

किशोरों के समक्ष चुनौती आक्रामकता और चुनौती

आक्रामकता गुस्से की अभिव्यक्ति का रूप ले सकती है जिसके परिणामस्वरूप अक्सर हिंसा होती है। आक्रामकता व्यक्ति के दिमाग में भी जमा हो सकती है और क्रोध के भावों के अचानक फटने का परिणाम हो सकता है; या यह मन के भीतर विकसित हो सकता है और व्यक्ति की भलाई को नष्ट कर सकता है। शोध से पता चला है कि जो किशोर आक्रामक होते हैं वे स्वयं माता-पिता द्वारा आक्रामकता के शिकार होते हैं , आक्रामकता को काबू करना एक किशोर के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। (गेब्रियल एट अला , 2018)। वास्तव में , शोध पुष्टि करता है कि घर पर शारीरिक दंड किशोरों में आक्रामक व्यवहार के कोड को विकसित करता है।

समायोजन और चुनौती

किशोर को जीवन में कई समायोजन करने पड़ते हैं (इलियट , 2000)। यह समायोजन शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक और शैक्षिक हो सकता है। संघर्ष और परिणामी आक्रामकता जीवन के संतुलन को बिगाड़ देती है। इसका परिणाम उन मुद्दों में होता है जिन्हें हल करने की आवश्यकता होती है। जिस लड़की को अचानक अपनी यौन विशेषताओं को ढंकने की आवश्यकता के बारे में सचेत किया जाता है , वह नाराजगी महसूस करती है। उसे शारीरिक और भावनात्मक दोनों तरह से समायोजन करना पड़ता है। कॉलेज जाने वाला छात्र , जिसके अहंकार पर मुहर लग चुकी है, खुद को मुखर करने और आत्मविश्वास बहाल करने की जरूरत महसूस करता है। शैक्षणिक क्षेत्र में ठोकर खाने वाला छात्र पढ़ाई और अपनी क्षमताओं के बीच संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता महसूस करता है।

शोध से पता चला है कि जो किशोर घर पर शारीरिक दंड के शिकार हुए हैं , उनमें अवसादग्रस्तता के लक्षण, आत्महत्या के विचार , ड्रग्स और शराब की लत आदि जैसे समस्या व्यवहार विकसित होने का अधिक खतरा है (स्ट्रॉस और कैटर, 1994)।

इस प्रकार चुनौती के द्वेषपूर्ण परिणाम होते हैं। यह आक्रामकता का निर्माण करता है और युवा वयस्क (चोई , हे और हराची, 2008) के समायोजन मंचान को अपसेट करता है। यह माता-पिता को दुःखी छोड़ देता है और घर की शांति भंग कर देता है, और अंत में समाज की शांति और भलाई करता है।

चुनौती और इसका समाधान

चुनौती हर जगह है। चुनौती मानव समाज के साथ एक आवश्यक और अपरिहार्य घटक के रूप में जुड़ा हुआ है। हम में से अधिकांश अपने घर या कार्यस्थल पर अपने जीवन में किसी न किसी रूप में किसी न किसी चुनौती की स्थिति से गुजरे हैं। यह जीवन का एक हिस्सा है , वास्तव में यह हमारे समय में वृद्धि है। यह एक तरफ बढ़ते व्यक्तिगत मतभेदों और समाज के विविधीकरण और दूसरी ओर आर्थिक , राजनीतिक और अन्य क्षेत्रों में बढ़ती जनसंख्या , और सीमित भौतिक स्थान और संसाधनों के साथ प्रतिस्पर्धा के कारण है। ऐसी पृष्ठभूमि में हमें व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों संघर्षों के बीच सीखना होगा, उन्हें रचनात्मक रूप से संभालना और हल करना होगा।

जब भी असंगत गतिविधियां होती हैं तो एक संघर्ष मौजूद होता है (ड्यूश, 1973)। एक गतिविधि जो दूसरे के साथ असंगत है, एक में जो दूसरी गतिविधि की घटना या प्रभावशीलता को अवरुद्ध या बाधित करती है। एक संघर्ष असहमति जितना छोटा या युद्ध जितना बड़ा हो सकता है। यह एक व्यक्ति , दो लोगों या अधिक या लोगों के समूह के बीच उत्पन्न हो सकता है। यह कहना सत्य है कि मतभेद मतभेद से उत्पन्न होते हैं। संघर्ष तनाव का एक स्रोत और

कारण है और एक ऐसा क्षेत्र है जिस पर विस्तार से ध्यान देने की आवश्यकता है। इसमें व्यक्तियों के बीच वास्तविक टकराव, या केवल शब्दों और कर्मों के माध्यम से प्रतीकात्मक टकराव शामिल हो सकता है। संघर्ष मौखिक रूप से अनुचित आलोचनाओं, आरोपों, धमकियों, या व्यक्तियों या संपत्ति को शारीरिक हिंसा के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है। परिहार और इनकार के रूप में यह अप्रभावित भी रह सकता है। संघर्ष महत्वपूर्ण नए विचारों और काम करने के तरीके के लिए उत्प्रेरक हो सकता है। हालाँकि , बहुत अधिक संघर्ष से फोकस और खंडित गतिविधि का नुकसान हो सकता है।

चुनौती जीवन का एक स्वाभाविक हिस्सा है। हम सभी समय-समय पर चुनौती का अनुभव करते हैं। यहां तक कि अगर हम ग्रह पर रहने वाले एकमात्र लोग होते, तब भी हम चुनौती का अनुभव करते क्योंकि हमारा न केवल दूसरों के साथ चुनौती होता है , बल्कि स्वयं के साथ भी चुनौती होता है। यह कहने के बाद कि चुनौती जीवन का एक अपरिहार्य पहलू है, हमें यह समझना चाहिए कि वास्तव में चुनौती क्या है। चुनौती केवल लक्ष्यों, चाहतों, स्वभाव, दृष्टिकोण और मूल्यों की असंगति को दर्शाता है , जिसका अर्थ है कि दो मौजूदा ज़रूरतें , लक्ष्य या व्यक्ति या अलग-अलग समूहों की इच्छाएँ एक साथ पूरी नहीं की जा सकती। एक चुनौती दिखाई दे सकता है और क्रियाओं या शब्दों (प्रकट) में व्यक्त किया जा सकता है या यह दिखाई और व्यक्त नहीं किया जा सकता है। जब एक चुनौती व्यक्त नहीं किया जाता है, तो इसका मतलब है कि यह अस्तित्व में नहीं है। कभी-कभी , यह समय के साथ अपने आप समाप्त हो सकता है लेकिन यह तीव्र भी हो सकता है। प्राधिकरण से जुड़े औपचारिक और पदानुक्रमित संबंधों में अव्यक्त चुनौती अक्सर हो सकते हैं। इस प्रकार संघर्ष की धारणाएँ किसी की स्थिति, स्थिति और संदर्भ के साथ अलग-अलग होंगी।

चुनौती लोगों में तनाव पैदा करते हैं। यह लोगों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है ; चिंता, अपराधबोध और हताशा की भावनाएँ उत्पन्न करना जो अविश्वास और संदेह का माहौल पैदा करती हैं। अक्सर, चुनौतियों के कारण सहयोग कम हो जाता है या गायब हो जाता है। संचार में खलल है। काम का सामान्य प्रवाह बाधित होता है और इसके परिणामस्वरूप अस्थिरता और अराजकता होती है। यह स्पष्ट निर्णय में हस्तक्षेप करता है और अच्छे निर्णय लेने में कठिनाई पैदा करता है।

यह एक व्यक्ति के अपने काम के आनंद को कम करता है। यह नकारात्मक सोच को बढ़ावा देने , आत्मविश्वास को नुकसान पहुंचाने , ध्यान को कम करने , ध्यान केंद्रित करने और एकाग्रता को बाधित करने और विकर्षणों का सामना करना मुश्किल बनाकर मन के सकारात्मक ढांचे को नुकसान पहुंचाता है , जिसकी आवश्यकता व्यक्ति को उच्च गुणवत्ता वाले काम के लिए होती है। अंततः संघर्ष का परिणाम काम करने या सीखने के लिए एकाग्रता और प्रेरणा की कमी है।

भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद के अनुसार, भारत में कम से कम 12.8% किशोर मानसिक स्वास्थ्य विकारों से पीड़ित हैं। इनमें से लगभग 3-4% चिकित्सकीय रूप से उदास हैं। किशोरावस्था के दौरान, लड़कों की तुलना में लड़कियों में अवसाद विकसित होने की संभावना दोगुनी होती है क्योंकि वे बहुत अधिक हार्मोनल परिवर्तन से गुजरती हैं और किशोरों की उम्र में लिंग संबंधी भेदभाव महसूस करती हैं। अकेले तनाव किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित नहीं करता है। अशांत मानसिक स्वास्थ्य के बहु-तथ्यात्मक कारण वंशानुगत, व्यक्तित्व और पर्यावरणीय कारक हैं, विशेष रूप से किशोरावस्था में। पहले परीक्षा का डर, फिर परिणाम, उसके बाद अगली कक्षा में

प्रवेश, नौकरी खोजने और इस प्रक्रिया के माध्यम से स्वस्थ संबंध बनाए रखने के डर से किशोरों को लगभग लगातार तनाव में रखा जाता है। इनमें से कोई भी एक अतिसंवेदनशील व्यक्ति को टूटने और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं में फिसलने का कारण बन सकता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि जब पहचान की जाती है, तो ये चिंताएं अधिकांश अन्य समस्याओं या विकारों की तरह प्रबंधनीय होती हैं।

इस अवस्था में किशोरों को विभिन्न प्रकार के संघर्षों और तनावपूर्ण स्थितियों का सामना करना पड़ता है। विभिन्न शिक्षाविद् और शोधकर्ताओं के निष्कर्षों के आधार पर किशोर संघर्ष के विभिन्न वर्गीकरण हैं। स्कूलों में संघर्ष को चार आयामों के तहत वर्गीकृत किया जा सकता है। ये विवाद, वैचारिक संघर्ष, हितों के टकराव और विकासात्मक संघर्ष की चुनौती हैं। किशोरावस्था से संबंधित विभिन्न समस्याएं उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य, सशक्तिकरण, रोजगार, नशीली दवाओं के दुरुपयोग, आराम के समय की गतिविधियों आदि से संबंधित हो सकती हैं। इस समय किशोर अत्यधिक दबाव का सामना करते हैं और अपनी शिक्षा, करियर विकल्पों, दोस्तों, परिवार और समाज के अन्य सदस्यों के साथ समस्या जैसी गंभीर परस्पर विरोधी स्थितियों से गुजरते हैं।

किशोरावस्था की अवधि में पाई जाने वाली कुछ विशेषताएं इस प्रकार हैं:

1. स्वतंत्र

जब बच्चे अपनी किशोरावस्था तक पहुंचते हैं, तो बहुत से लोग स्वतंत्र होने की बढ़ती आवश्यकता महसूस करते हैं और भावनात्मक और मानसिक रूप से अपने माता-पिता से दूर होने लगते हैं। डेटिंग, कर्फ्यू और जिम्मेदारियों को लेकर अक्सर चुनौतियां सामने आती हैं।

2. साथियों का दबाव

अधिकांश किशोर अपने साथियों द्वारा स्वीकार किया जाना चाहते हैं, और कुछ अपने माता-पिता के नियंत्रण में बहुत अधिक दिखने का विरोध करते हैं। स्कूल में साथियों द्वारा प्रोत्साहन, चिढ़ाना या उपहास करना अक्सर ऐसे मामलों में किशोरों को उन व्यवहारों में शामिल होने के लिए लुभाता है जो वे अन्यथा नहीं करते, जैसे कि धूम्रपान और शराब पीना।

3. शक्ति

कुछ किशोर अपने जीवन में इस चरण के दौरान अपने माता-पिता द्वारा किसी भी प्रकार के निर्देश, निर्देश या अनुशासन का विरोध करते हैं। वे नियमों, सीमाओं और कर्फ्यू की अनदेखी कर सकते हैं। वे वापस बात भी कर सकते हैं, बहस कर सकते हैं या माता-पिता को नियमों और अपेक्षाओं पर चुनौती देना शुरू कर सकते हैं, जो अक्सर जोर से और लंबी असहमति में फूटते हैं जो घर में पारिवारिक शांति को बाधित कर सकते हैं।

4. संचार

माता-पिता का मानना हो सकता है कि उनके किशोर पर भूत है, जबकि एक किशोर को ऐसा लग सकता है कि उनके माता-पिता कभी भी उन्हें समझ नहीं पाएंगे। दोनों में से कोई भी सच नहीं है, लेकिन किशोरावस्था के दौरान भावनाएं बहुत अधिक होती हैं। विश्वास और सम्मान किशोर और उनके माता-पिता के बीच की खाई को पाटने का एक लंबा रास्ता तय करते हैं। माता-पिता जो महसूस करते हैं कि उनका बच्चा जल्द ही वयस्क होने वाला है, वे इस संक्रमण को सुगम बनाने में मदद कर सकते हैं क्योंकि वे बचपन के परिचित सुख-सुविधाओं के बीच संतुलन बनाते हैं

और आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता के कगार पर खड़े होते हैं। किशोर वर्ष परस्पर विरोधी भावनाओं और विचारों से भरे होते हैं क्योंकि ये लगभग बड़े हो चुके बच्चे वयस्कता के करीब होते हैं। माता-पिता अक्सर यह सोचकर रह जाते हैं कि उनके रमणीय बच्चों का क्या हुआ जो खुशमिजाज से मूड़ी, निराश, चुनौती से भरे किशोरों में बदल गए।

5. स्वतंत्रता और नियंत्रण

किशोरावस्था के दौरान, बच्चे स्वाभाविक रूप से स्वतंत्रता स्थापित करने की ओर बढ़ते हैं। अधिकांश किशोर अपने परिवार के बाहर के लोगों से संगीत, क्या पहनें और अन्य सनक से बहुत प्रभावित होते हैं जो उनके माता-पिता को मंजूर नहीं हो सकते हैं। माता-पिता को यह समझने की जरूरत है कि यह सामान्य है और वे अभी भी अपने बच्चों के जीवन में महत्वपूर्ण हैं, तब भी जब ऐसा लगता है कि किशोर उन्हें दूर धकेलने की कोशिश कर रहे हैं। किशोर अपनी स्वतंत्रता का प्रयोग करने की कोशिश कर रहे हैं क्योंकि वे वयस्कता के करीब हैं। जैसे-जैसे किशोरी बड़ी होती जाती है, उसके नियंत्रण के लिए लड़ने की संभावना होती है, जो उसके माता-पिता के साथ चुनौती पैदा कर सकता है। यह उसके माता-पिता को आहत और अस्वीकृत महसूस कर सकता है, तनाव पैदा कर सकता है क्योंकि इच्छाशक्ति की निरंतर लड़ाई होती है। जैसा कि किशोरी दोस्तों, कपड़ों, संगीत, कफ्यू और अन्य मुद्दों पर अपनी स्वतंत्रता का दावा करती है, वह नियंत्रण पाने और स्वतंत्र वयस्क बनने के अपने डर को दूर करने का जोखिम उठा रही है।

6. अपेक्षाएं

माता-पिता को अपने बच्चों से स्कूल में ग्रेड से लेकर बाद में कॉलेज और करियर के चुनाव तक सभी चीजों की अपेक्षा होती है। माता-पिता की निराशा उनके और उनके किशोरों के बीच संबंधों में चुनौती और समस्याएं पैदा करती है। यह अक्सर गुस्से के रूप में सामने आता है, किशोरों को उन लोगों से अस्वीकृति की भावना देता है जो कभी उनके जीवन में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति थे।

7. प्रयोग

किशोर वर्ष वह समय भी होता है जब बच्चे जोखिम भरे व्यवहारों का प्रयोग करना शुरू कर देते हैं, जैसे ड्रग्स, शराब, तंबाकू और सेक्स। माता-पिता से अपेक्षाओं की जानकारी और समझ के आधार के बिना, जब माता-पिता इस तथ्य के बाद अस्वीकृति व्यक्त करते हैं तो किशोर के भ्रमित होने की संभावना अधिक होती है। माता-पिता को अपने बच्चों को किशोरावस्था में आने से पहले संवाद और शिक्षित करने की आवश्यकता है, और संचार लाइनों को खुला रहने की आवश्यकता है, या समस्याएँ बढ़ेंगी।

8. आंतरिक संघर्ष

विकासात्मक मनोवैज्ञानिक और मनोविश्लेषक एरिक एरिकसन का दावा है कि किशोर भूमिका भ्रम और पहचान के साथ संघर्ष करते हैं। किशोर लगातार समाज के लेबल के बीच भ्रम को दूर करने की कोशिश कर रहे हैं कि उन्हें कौन होना चाहिए बनाम वे वास्तव में व्यक्ति के रूप में कौन हैं। किशोरों को यह महसूस करने की आवश्यकता है कि वे एक अद्वितीय व्यक्ति रहते हुए एक इकाई से संबंधित हैं।

9. सहोदर स्पद्धा

भाई-बहनों के बीच ईर्ष्या और प्रतिस्पर्धा चुनौती का सामान्य कारण है, और इसे अक्सर सहोदर प्रतिद्वंद्विता कहा जाता है। शामिल बच्चों की उम्र, व्यक्तित्व और जरूरतों के अनुसार चुनौती के प्रकार अलग-अलग होते हैं। जैसा कि व्हीलर बताते हैं, "छोटे बच्चे अधिक बार वस्तु मुद्दों में शामिल होते हैं और अधिक शारीरिक रणनीतियों का उपयोग करते हैं, जबकि बड़े बच्चे सामाजिक मुद्दों पर असहमत होते हैं और अधिक मौखिक बातचीत और तर्क का उपयोग करते हैं।" घर में बच्चों के बीच चुनौती इस बात का आइना हो सकती है कि माता-पिता कैसे चुनौती का सामना करते हैं। जिन बच्चों के माता-पिता संघर्ष के दौरान आक्रामक हो जाते हैं, वे भी आक्रामकता प्रदर्शित करेंगे, जबकि जिन बच्चों के माता-पिता लगातार स्वस्थ चुनौती का समाधान करते हैं, वे आमतौर पर अपने भाई-बहनों के साथ असहमति का शांति समाधान ढूंढते हैं।

10. कक्षा में चुनौती

साथियों के बीच चुनौती अपरिहार्य है। ग्रुप या पेयर प्ले के दौरान बच्चों के बीच विवाद हो सकता है। शिक्षक कभी-कभी छोटी-छोटी चुनौतियों का उपयोग सिखाने योग्य क्षण के रूप में करते हैं। यदि संभव हो तो छात्रों को अलग कर दें ताकि वे शांत हो सकें। फिर दोनों विवरणों को सुनें, समस्या की पहचान करें और उचित समाधानों पर चर्चा करें। कुछ स्कूल प्रणालियाँ सहकर्मी मध्यस्थों का उपयोग करती हैं। मध्यस्थ नामित, प्रशिक्षित छात्र हैं जो चुनौती समाधान में तटस्थ पक्षों के रूप में कार्य करते हैं। वे लड़ने वाले छात्रों को एक समझौता या समाधान तक पहुँचने में मदद करते हैं।

11. छात्र बनाम शिक्षक

चुनौती किशोर और उसके शिक्षक के बीच भी हो सकती है। इस स्तर पर यह काफी सामान्य है कि छात्र अपने शिक्षकों के हर विचार के समर्थन में नहीं आते हैं। वे तर्क पसंद करते हैं और अपने शिक्षकों की तरह हर दृष्टिकोण से अलग होने की कोशिश भी करते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

1. किशोरावस्था में नैतिक विकास चुनौती पर संवेदनाओं के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. किशोरों के संवेग के प्रति चुनौती पर पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना।

साहित्य की समीक्षा

वेमाउथ और अन्य (2016) ने माता-पिता के किशोर चुनौतियों पर 52 अध्ययनों से उपलब्ध साहित्य का संश्लेषण किया। परिणामों से पता चला कि माता-पिता का किशोर संघर्ष सकारात्मक रूप से युवा कुसमायोजन से संबंधित था। माता-पिता और किशोरों के बीच असहमति और शत्रुता का युवा विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

गदल्लाह और अन्य (2016) का उद्देश्य किशोर माता-पिता के चुनौतियों और स्कूल की उपलब्धि और किशोरों के आत्मसम्मान के बीच संबंध का पता लगाना था। उपयोग की गई शोध डिजाइन वर्णनात्मक और सहसंबंधी थी। नमूने में 1018 किशोर शामिल थे। उपयोग किए गए उपकरण जांचकर्ताओं द्वारा बनाए गए थे। वे माता-पिता किशोर मुद्दे चेकलिस्ट, माता-पिता और किशोरों के लिए जनसांख्यिकीय प्रश्नावली, किशोरों और किशोरों की स्कूल

उपलब्धि के लिए आत्म-सम्मान का पैमाना था। परिणामों से पता चला कि 93% से अधिक किशोरों का अपने माता-पिता के साथ संघर्ष था। जैसे-जैसे माता-पिता और किशोरों के बीच संघर्ष बढ़ा, स्कूल की उपलब्धि में भी वृद्धि हुई। हालांकि संघर्ष और किशोरों के आत्मसम्मान के बीच कोई संबंध नहीं पाया गया। संघर्ष की आवृत्ति अधिक थी लेकिन तीव्रता गंभीर नहीं थी।

सईदा सुलताना (2017) ने यह पता लगाने के लिए एक अध्ययन किया कि क्या सोशल नेटवर्किंग साइटों के अधिक उपयोग से पारिवारिक संबंधों में गिरावट आई है। सैंपल में ढाका के 384 युवक शामिल थे। परिणामों से पता चला कि सोशल नेटवर्किंग साइटों के अत्यधिक उपयोग के कारण पारिवारिक संबंध टूट गए।

अग्रवाल और अन्य (2017) ने यह अध्ययन उत्तर प्रदेश में किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य किशोरों और उनके माता-पिता के बीच पीढ़ी के अंतराल का अध्ययन करना था। नमूने में ऐसे किशोर शामिल थे जो यौवन तक पहुँच चुके हैं और बड़े किशोर भी, उनके माता-पिता के साथ जो 40 वर्ष से ऊपर हैं। इस उपकरण में अन्वेषक द्वारा पीढ़ी अंतराल से संबंधित मुद्दों और हमारे जीवन पर इसके दिन-प्रतिदिन के प्रभाव के बारे में एक प्रश्नावली शामिल थी। परिणाम से पता चला कि विभिन्न पीढ़ियों के 85.18% माता-पिता पीढ़ी के अंतराल के बारे में अलग-अलग दृष्टिकोण रखते हैं।

वलीजादेह और अन्य (2018) ने ईरान में पालन-पोषण पर एक अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अपने किशोर बच्चों के प्रति माता-पिता की चिंता का पता लगाना था। नमूने में किशोरों के साथ 23 माता-पिता शामिल थे। उद्देश्यपूर्ण नमूने का उपयोग किया गया था। अर्ध-संरचित साक्षात्कारों के माध्यम से डेटा एकत्र किया गया था। परिणामों से पता चला कि जैसे-जैसे बच्चे किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं, माता-पिता को लगता है कि वे पैतृक हाथों से बाहर जा रहे हैं।

गेब्रियल और अन्य (2018) ने ब्रिटेन में अपने माता-पिता के प्रति किशोरों की आक्रामकता और हिंसा की जांच करने के लिए एक गुणात्मक अध्ययन किया। डेटा माता-पिता के साथ अर्ध-संरचित साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त किया गया था। नमूने में 18 प्रतिभागी शामिल थे जिनमें से 3 माता-पिता थे, 5 व्यवसायी थे और 8 व्यवसायी फोकस समूह थे और 2 युवा थे। साक्षात्कार एवं फोकस समूह की बैठक हुई। निष्कर्षों से पता चला कि किशोर जो अपने माता-पिता के प्रति आक्रामक थे, अक्सर स्वयं इसके शिकार होते हैं।

यू. हरिकृष्णन और ग्रेस लालहलुपुई साइलो (2019) ने विभिन्न ऑनलाइन सर्च इंजनों, पत्रिकाओं और मिजोरम विश्वविद्यालय के पुस्तकालय से अप्रकाशित थीसिस और पिछले 10 वर्षों के लेखों के प्रासंगिक अध्ययन पर ध्यान केंद्रित किया। किशोरावस्था मानव जीवन काल में जबरदस्त जैविक परिवर्तनों की अवधि है। बेहतर तंदुरुस्ती और विकास के लिए किशोरों को शारीरिक और मानसिक दोनों तरह के स्वास्थ्य की जरूरत होती है। अधिकांश किशोर स्कूल जाने की उम्र के हैं। इसलिए, वर्तमान समीक्षा भारत में स्कूल जाने वाले किशोरों के बीच स्वास्थ्य पर केंद्रित है। समीक्षाओं से पता चलता है कि स्कूल जाने वाले किशोरों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले दैनिक जीवन में किशोरों के स्वास्थ्य के लिए जोखिम की दर बढ़ जाती है। भारत में स्कूल जाने वाले किशोरों के लिए रोकथाम, हस्तक्षेप और प्रोत्साहन योजनाओं पर ध्यान केंद्रित करने वाले अध्ययनों की कमी थी।

इसलिए, भारत में स्कूल जाने वाले किशोरों के जीवन को बढ़ाने के लिए एक व्यापक हस्तक्षेप और निगरानी पैकेज प्रदान करने की आवश्यकता है।

स्वामी और अन्य (2019) का उद्देश्य और उद्देश्य स्वास्थ्य जोखिम व्यवहारों की व्यापकता का अनुमान लगाना था और प्रमुख निष्कर्षों के आधार पर सिफारिशें सुझाना था। उच्च जोखिम वाले व्यवहारों को उन व्यवहारों के रूप में परिभाषित किया जाता है जो किशोरों, युवाओं और समाज के अन्य सदस्यों के स्वास्थ्य और भलाई के लिए खतरा हैं। किशोरावस्था में प्राप्त होने वाली आदतों और व्यवहारों का प्रभाव वयस्कता में भी पड़ता है। शराब का सेवन, धूम्रपान, नशीले पदार्थों का सेवन, असुरक्षित ड्राइविंग, अनजाने में चोट और हिंसा जैसे स्वास्थ्य जोखिम वाले व्यवहार और किशोरों में यौन जोखिम वाले व्यवहार व्यापक रूप से प्रचलित हैं। किशोरों में नई चीजों को प्रयोग करने की प्रवृत्ति होती है, वे नई चीजों को एक्सप्लोर करना चाहते हैं इस वजह से उनमें जोखिम लेने का व्यवहार होता है, यह स्वभाव हार्मोनल उछाल और भावनात्मक प्रबलता के कारण भी होता है। 26% किशोर सड़क यातायात दुर्घटना का अनुभव करते हैं, 4.5% हमले का अनुभव करते हैं। 11% धूम्रपान करते थे, 9% गैर-धूम्रपान उत्पाद, 2.67% अपने जीवन में कुछ समय शराब का उपयोग करते हैं। 9% किशोर आरटीआई के लक्षणों का अनुभव करते हैं।

यू. हरिकृष्णन और ग्रेस लालहलुपुई साइलो (2020) ने स्कूल जाने वाले किशोरों के सामने आने वाली चुनौतियों पर माता-पिता और शिक्षकों की धारणा की जांच की। डिजाइन प्रकृति में पार अनुभागीय है और नमूने में स्कूल जाने वाले किशोरों के 60 माता-पिता और केरल के कोल्लम जिले के एक सरकारी और एक निजी स्कूल से आठवीं से बारहवीं कक्षा के 20 शिक्षक शामिल हैं। डेटा को निः शुल्क लिस्टिंग का उपयोग करके एकत्र किया गया था और एंथ्रोपैक सॉफ्टवेयर के माध्यम से विश्लेषण किया गया था। ज्यादातर माता-पिता का मानना था कि स्कूल जाने वाले किशोरों को काफी तनाव का सामना करना पड़ता है और वे घर पर पढ़ाई नहीं कर रहे हैं। दूसरी ओर, शिक्षकों ने महसूस किया कि उनके किशोर छात्रों को परीक्षा का डर, मीडिया के नकारात्मक प्रभाव, घर पर आर्थिक बोझ, माता-पिता की अपने बच्चों की शिक्षा में कम भागीदारी और खराब शैक्षणिक प्रदर्शन जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। निष्कर्ष स्कूल जाने वाले किशोरों के समग्र विकास के लिए माता-पिता और शिक्षकों के सक्रिय सहयोग और भागीदारी को एकीकृत करने की आवश्यकता को सामने लाते हैं।

जून वांग और अन्य (2021) ने पाया कि प्रवासी और शहरी बच्चों की साक्षरता और गणित के प्रदर्शन के विकासात्मक प्रक्षेपवक्रों की खोज करने के साथ-साथ पारिवारिक सामाजिक आर्थिक स्थिति (एसईएस) और पेरेंटिंग शैलियों के प्रभाव, जिसमें प्रवासी बच्चों की तुलना उनके शहरी समकक्ष साथ तुलना करके पेरेंटिंग शैलियों के मध्यस्थता प्रभाव शामिल हैं। चीन में प्रवासी बच्चों का सकारात्मक विकास गुणवत्तापूर्ण शहरी शिक्षा संसाधनों तक उनकी असमान पहुंच के कारण बाधित है। यह अध्ययन प्रवासी और शहरी बच्चों की साक्षरता और गणित के अलग-अलग प्रक्षेपवक्रों पर ध्यान केंद्रित करने के महत्व पर प्रकाश डालता है ताकि उनकी स्कूली उपलब्धि में सुधार हो सके।

इकरा मुश्ताक और अन्य (2021) ने किशोर मनोवैज्ञानिक संकट, सामाजिक और शैक्षणिक समायोजन पर अंतर-माता-पिता के संघर्ष के प्रभाव का पता लगाने और कोविड-19 के दौरान आत्महत्या के विचार की जांच करने की मांग की। परिणाम खतरनाक पाए गए क्योंकि 22% व्यक्तियों ने आत्महत्या की प्रवृत्ति प्रदर्शित की, 9% ने एक

बार आत्महत्या का प्रयास किया, 4.6% ने दो बार आत्महत्या करने की कोशिश की, और 11% ने कहा कि वे फिर से ऐसा करने की संभावना रखते हैं। इसलिए, मीडिया और सरकार मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और आत्मघाती व्यवहार को रोकने के लिए जागरूकता कार्यक्रमों और परामर्श पहल की मेजबानी कर सकते हैं। इसके अलावा, माता-पिता को अपने बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर अंतर-अभिभावकीय तर्कों के प्रभाव के बारे में सामुदायिक स्तर पर शिक्षित किया जा सकता है।

खरे, शिखा (2022) का उद्देश्य किशोरों की समस्या को समझना है और हम उनकी समस्या को कैसे दूर कर सकते हैं। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि किशोरावस्था एक व्यक्ति के जीवन से जुड़ी एक संवेदनशील महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है, प्रत्येक समझ और उसके मुद्दों को खोजने के लिए एक बहु-विषयक दृष्टिकोण लिया जाना चाहिए। इन दिनों किशोरों के सामने आने वाली संभावित समस्याएं अलग-अलग होती हैं लेकिन इन मुद्दों पर केवल तभी रोक लगाई जा सकती है जब माता-पिता और वैकल्पिक अभिभावक उनकी समस्याओं के लक्षणों को समझेंगे। समस्या(यों) पर चर्चा करने के लिए माता-पिता को अपने बच्चों से, सावधानी से और बहुत ही दोस्ताना तरीके से संपर्क करना पड़ा। यह किशोरों के लिए भेद्यता की मात्रा है, जिसे समर्थन और समझ की आवश्यकता है। आज जिन मुद्दों का सामना किशोरों को करना पड़ रहा है, वे बहुमुखी हैं, लेकिन कई मामलों में उलझे हुए हैं। माता-पिता, शिक्षाविदों और वैकल्पिक अभिभावकों को उन मुद्दों के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए जो आज के किशोरों का सामना करते हैं और अपने सर्वोत्तम कौशल से मुद्दों को खत्म करने के लिए तैयार रहते हैं।

अलका महोबिया और सोनाली जी चौधरी (2022) ने प्रजनन स्वास्थ्य से संबंधित किशोरों की समस्याओं पर चर्चा की, सामाजिक सुरक्षा उपायों और किशोरों के बीच संबंधित कारकों का अनुमान लगाया, और पता लगाया कि पहुंच और उपलब्धता के मामले में स्वास्थ्य सेवाएं गंभीर रूप से सीमित क्यों हैं। किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम वर्तमान में खंडित हैं, किशोरों की सभी जरूरतों को पूरा करने वाला कोई व्यापक कार्यक्रम नहीं है। प्रमुख बाधाएं विश्वसनीय जानकारी की कमी, उचित मार्गदर्शन की कमी, माता-पिता की अज्ञानता, कौशल की कमी और स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली से अपर्याप्त सेवाएं हैं। हमें एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो युवा वयस्कों के सभी स्वास्थ्य मुद्दों को संबोधित करे, प्रजनन स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा, मानसिक कल्याण और एक स्वस्थ जीवन शैली की दिशा में संचार से जुड़े हस्तक्षेपों पर ध्यान केंद्रित करे।

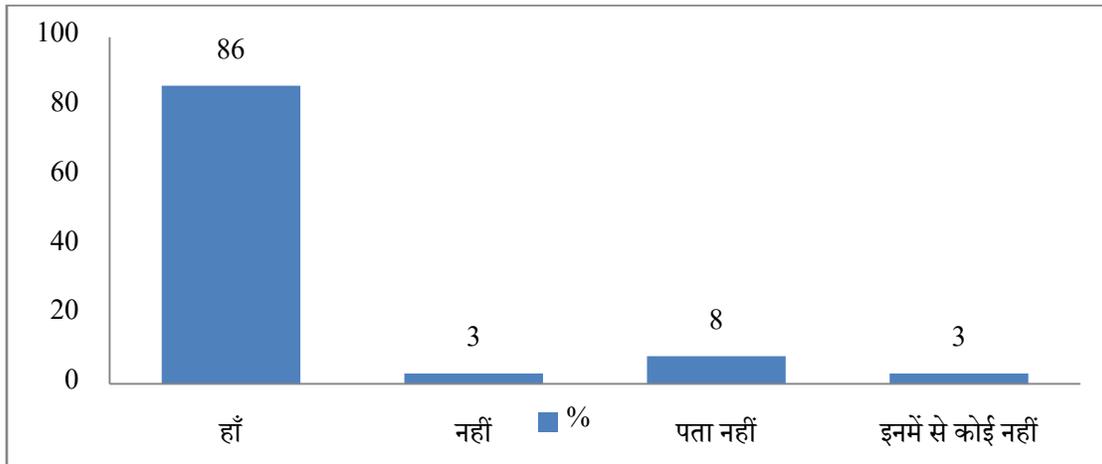
शोध क्रियाविधि

इस अध्ययन में शोधकर्ता अपने उद्देश्य के अनुरूप ही वर्णनात्मक अभिकल्पों का सहारा लिया है। उत्तरदाताओं का चयन लखनऊ शहर के चयनित 5 वार्डों से किया गया है। प्रत्येक चयनित वार्ड से 100 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। इस प्रकार लखनऊ शहर के कुल 5 वार्डों से कुल मिलाकर 500 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। प्रत्येक वार्ड में सर्वप्रथम उन परिवारों के किशोरों और किशोरियों का अध्ययन किया गया है जिनके घरों के किशोरों और किशोरियाँ नेतृत्व में सहभागी हैं। इस अध्ययन में शोधकर्ता प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्यों का प्रयोग करके सूचना एकत्रित किया है।

विश्लेषण और व्याख्या

सारणी 1 चुनौतियों का सामना करना एक प्रकार की भावनात्मक क्रिया होती है, जिससे किशोर का मनोशारीरिक संतुलन पूर्णरूप से बिगड़ जाता है।

विकल्प	मत	संख्या	%	मध्यमान	मानक विचलन
1	हाँ	430	86	1.3	0.8
2	नहीं	15	3	0.7	2.2
3	पता नहीं	40	8	1.0	2.0
4	इनमें से कोई नहीं	15	3	0.3	1.1
5	कुल	500	100.0		

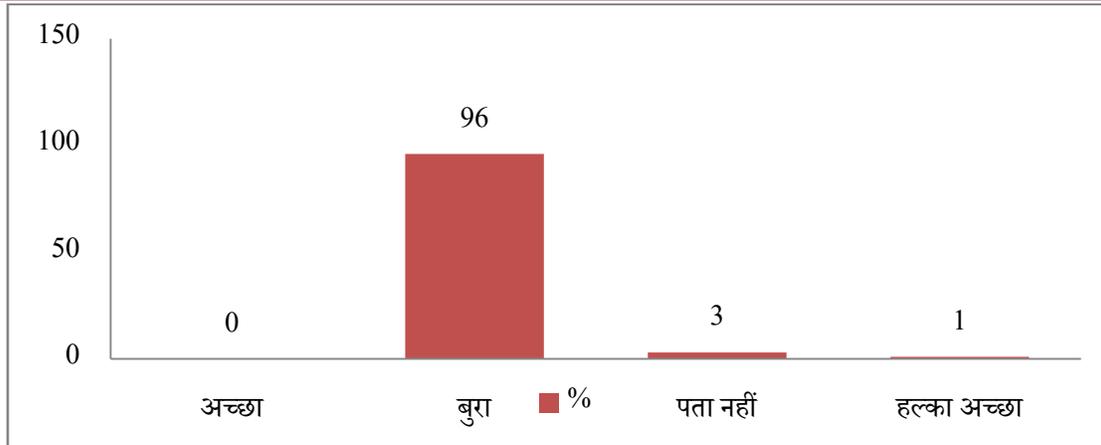


ग्राफ 1 चुनौतियों का सामना करना एक प्रकार की भावनात्मक क्रिया होती है, जिससे किशोर का मनोशारीरिक संतुलन पूर्णरूप से बिगड़ जाता है।

उपरोक्त सारणी 1 से स्पष्ट है कि 86 प्रतिशत लोगों ने विकल्प 1 को चुना जिससे स्पष्ट हुआ कि चुनौतियों का सामना करने से मनोशारीरिक संतुलन पूर्णरूप से बिगड़ जाता है। 3 प्रतिशत लोगों ने विकल्प 2 और 4 को चुना जबकि 8 प्रतिशत लोगों ने विकल्प 3 को चुना। जिसका अर्थ है कि उन्हें पता ही नहीं है कि चुनौतियों का सामना करने से मनोशारीरिक संतुलन बिगड़ जाता है। विकल्प 1 का मध्यमान 1.3 और मानक विचलन 0.8 है।

सारणी 2 चुनौतियों का स्वास्थ्य पर कैसा प्रभाव पड़ता है

विकल्प	मत	संख्या	%	मध्यमान	मानक विचलन
1	अच्छा	0	0	0.0	0.0
2	बुरा	480	96	0.3	0.7
3	पता नहीं	15	3	1.0	0.2
4	हल्का अच्छा	5	1	0.1	0.3
5	कुल	500	100.0		

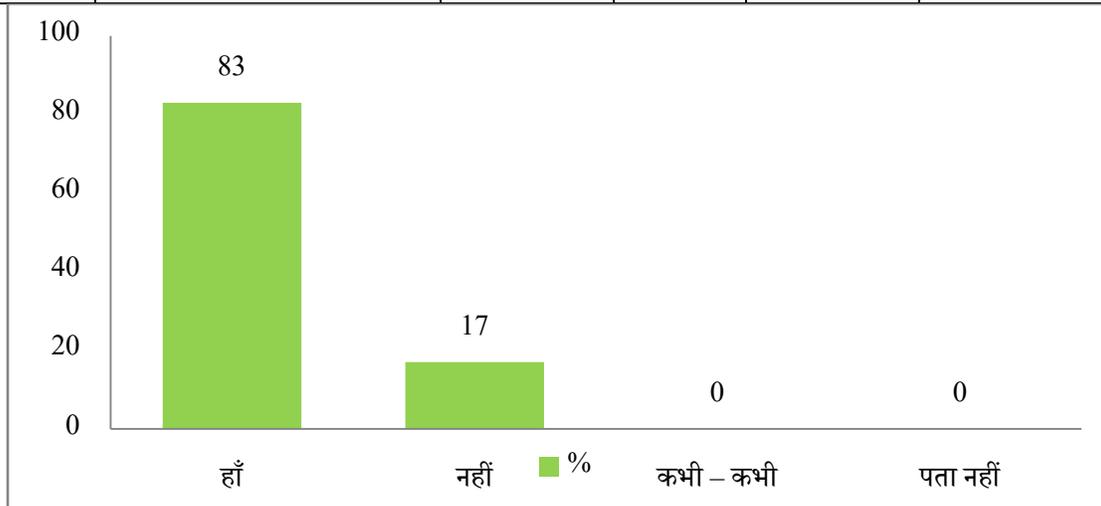


ग्राफ 2 चुनौतियों का स्वास्थ्य पर कैसा प्रभाव पड़ता है

सारणी 2 एवं ग्राफ 2 से स्पष्ट है कि 96 प्रतिशत लोगों को यह बात मालूम है कि चुनौतियों का स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इस दृष्टि से 480 उत्तरदाताओं ने उत्तर दिया वह सर्वाधिक विकल्प 2 में था जिसका मध्यमान 0.3 और मानक विचलन 0.7 है। इससे सिद्ध होता है कि प्रश्नावली में दिया गया प्रश्न सार्थक है। 1 प्रतिशत लोगों को पता नहीं है जबकि मात्र 3 प्रतिशत ने कहा कि ने क्रोध को हल्का अच्छा माना।

सारणी 3 किशोरों की तुलना में किशोरियों ज्यादा संवेदनशील होती हैं।

विकल्प	मत	संख्या	%	मध्यमान	मानक विचलन
1	हाँ	415	83	1.4	1.3
2	नहीं	85	17	0.3	0.5
3	कभी – कभी	0	0	0.0	0.0
4	पता नहीं	0	0	0.0	0.0
5	कुल	500	100.0		

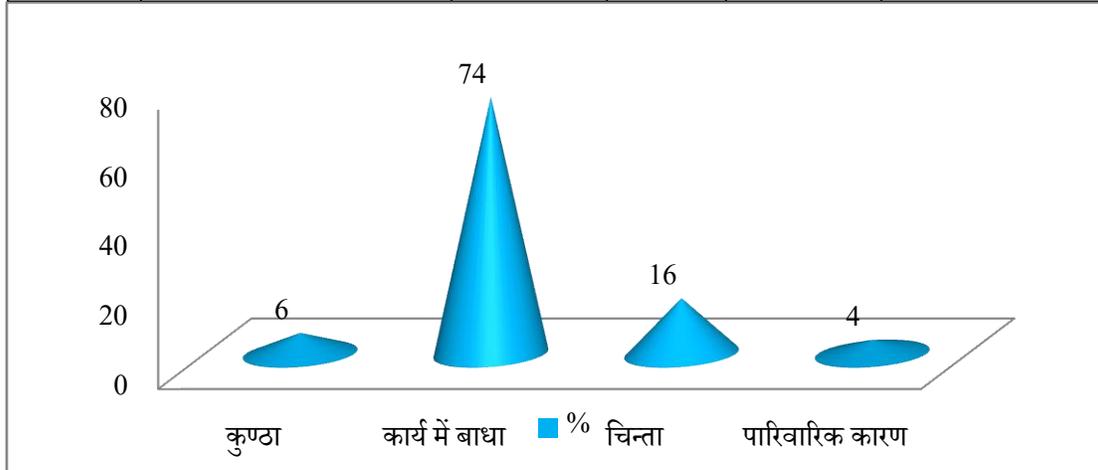


ग्राफ संख्या 3 किशोरों की तुलना में किशोरियों ज्यादा संवेदनशील होती हैं।

सारणी 3 एवं ग्राफ 3 से स्पष्ट है कि किशोरों की तुलना में किशोरियों ज्यादा संवेदनशील होती हैं क्योंकि 83 प्रतिशत लोगों ने विकल्प 1 को ही चुना। जिसका मध्यमान 1.4 और मानक विचलन 1.3 है जबकि मात्र 17 प्रतिशत लोगों ने विकल्प 2 को चुना। इससे सिद्ध होता है कि प्रश्नावली में दिए गए प्रश्न सार्थक हैं।

सारणी संख्या 4 किशोरावस्था में क्रोध उत्पन्न होने के कारण हैं

विकल्प	मत	संख्या	%	मध्यमान	मानक विचलन
1	कुण्ठा	30	6	0.7	1.6
2	कार्य में बाधा	370	74	1.3	0.9
3	चिन्ता	80	16	1	1.4
4	पारिवारिक कारण	20	4	0.3	0.3
5	कुल	500	100.0		

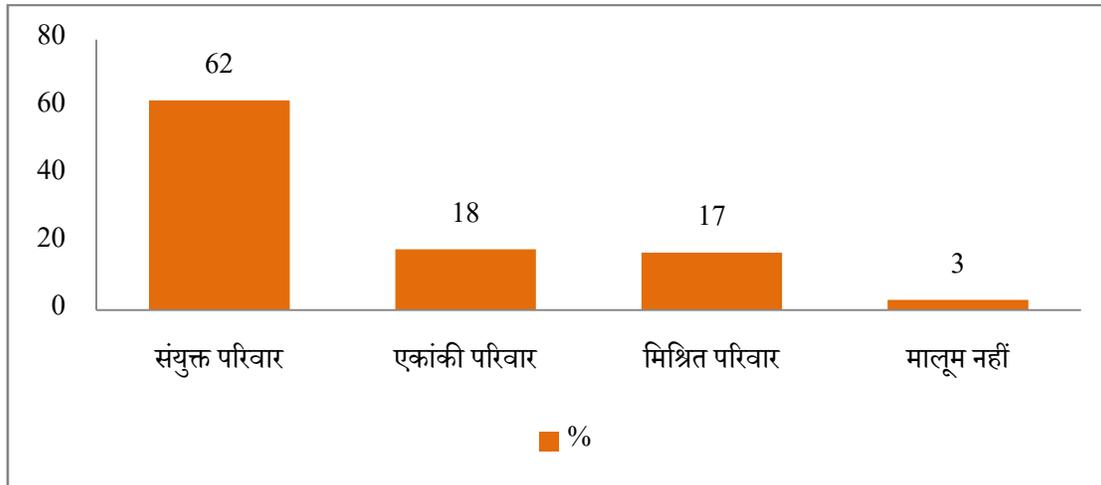


ग्राफ संख्या 4 किशोरावस्था में क्रोध उत्पन्न होने के कारण हैं

सारणी 4 एवं ग्राफ 4 से स्पष्ट है कि किशोरावस्था में क्रोध का कारण कार्य में बाधा डालना है क्योंकि सर्वाधिक 74 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने विकल्प 2 का चुनाव किया। इसका मध्यमान 1.3 और मानक विचलन 0.9 है। इसके बाद 16 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने चिन्ता को किशोरावस्था में क्रोध उत्पन्न होने का कारण माना। इसके बाद क्रमशः विकल्प 1 और विकल्प 4 का उत्तर प्राप्त हुआ।

सारणी 5 किशोर और किशोरियों की प्रसन्नता के लिए कौन-सा परिवार ज्यादा अच्छा है।

विकल्प	मत	संख्या	%	मध्यमान	मानक विचलन
1	संयुक्त परिवार	310	62	1.3	0.8
2	एकांकी परिवार	90	18	1.0	1.4
3	मिश्रित परिवार	85	17	0.6	0.9
4	मालूम नहीं	15	3	0.3	1.1
5	कुल	500	100.0		

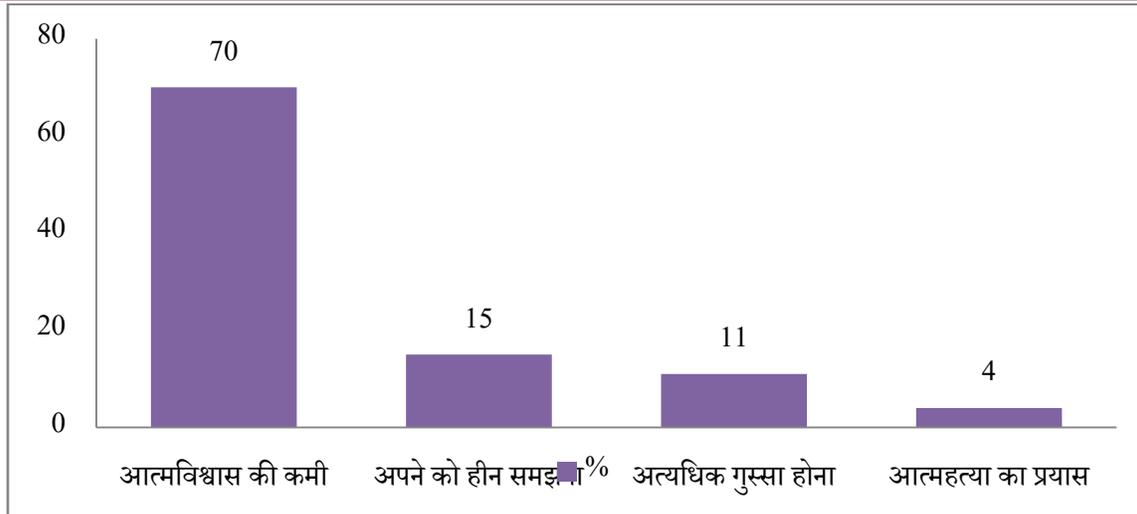


ग्राफ 5 किशोर और किशोरियों की प्रसन्नता के लिए कौन-सा परिवार ज्यादा अच्छा है।

उपरोक्त सारणी 5 से स्पष्ट होता है कि किशोर और किशोरियों की प्रसन्नता के लिए संयुक्त परिवार सबसे ज्यादा उपयुक्त होता है क्योंकि 62 प्रतिशत लोगों ने प्रश्नावली में इस प्रश्न के विकल्प 1 को चुना। विकल्प 2 में 18 प्रतिशत, विकल्प 3 में 17 प्रतिशत और विकल्प 4 में 3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने उत्तर दिया।

सारणी संख्या 6 किशोर और किशोरियों में डिप्रेशन के लक्षण हैं।

विकल्प	मत	संख्या	%	मध्यमान	मानक विचलन
1	आत्मविश्वास की कमी	350	70	1.2	1.9
2	अपने को हीन समझना	75	15	0.6	1.4
3	अत्यधिक गुस्सा होना	55	11	1.0	0.9
4	आत्महत्या का प्रयास	20	4	0.3	1.1
5	कुल	500	100.0		

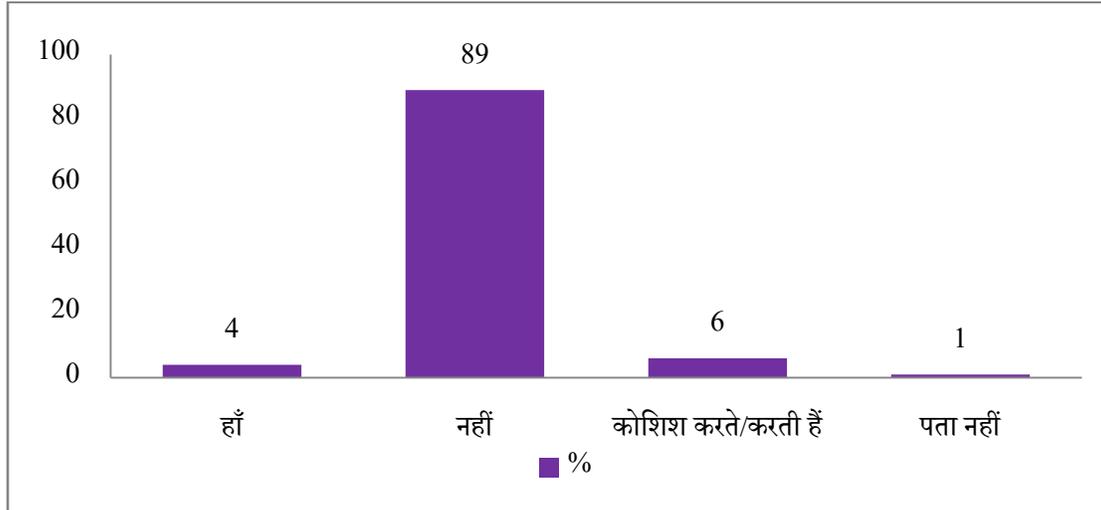


ग्राफ संख्या 6 किशोर और किशोरियों में डिप्रेशन के लक्षण हैं।

उपरोक्त सारणी 6 से स्पष्ट है कि जब किशोरावस्था में डिप्रेशन आता है तब किशोर और किशोरियों आत्मविश्वास की कमी महसूस करते हैं क्योंकि इस प्रश्न के उत्तर में सर्वाधिक 350 उत्तरदाताओं ने विकल्प 1 को चुना है। विकल्प 2 को 15 प्रतिशत ने विकल्प 3 को 11 प्रतिशत ने और विकल्प 4 को मात्र 4 प्रतिशत ने चुना।

सारणी 7 किशोर और किशोरियों अपनी - अपनी चुनौतियों को समझते/समझती हैं

विकल्प	मत	संख्या	%	मध्यमान	मानक विचलन
1	हाँ	20	4	1.3	0.8
2	नहीं	445	89	1	1.4
3	कोशिश करते/करती हैं	30	6	1.7	1.5
4	पता नहीं	5	1	0.7	0.2
5	कुल	500	100.0		

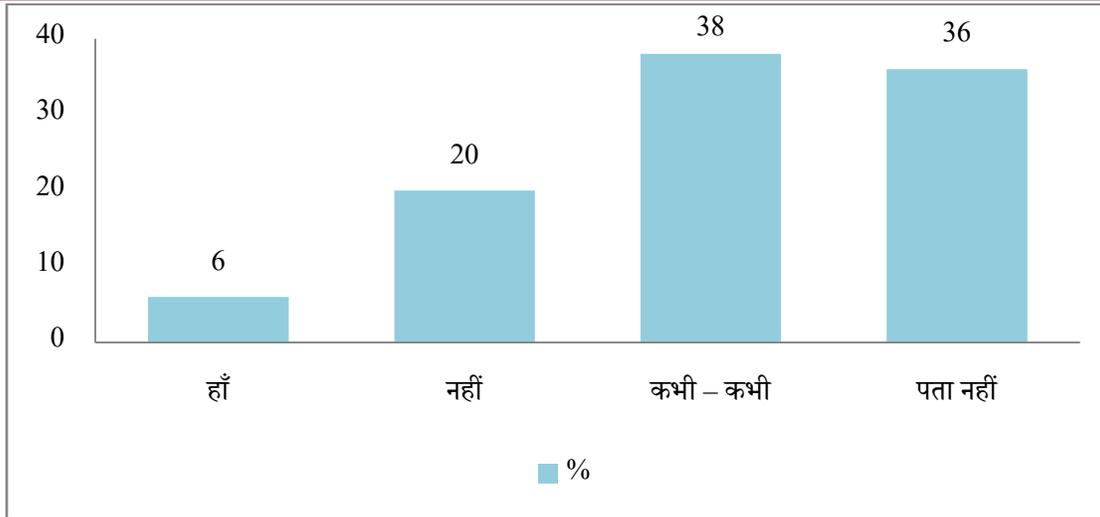


ग्राफ संख्या 7 किशोर और किशोरियों अपनी - अपनी चुनौतियों को समझते/समझती हैं

उपरोक्त सारणी 7 एवं ग्राफ 7 से स्पष्ट है कि किशोरावस्था में किशोर और किशोरियों अपनी - अपनी चुनौतियों को नहीं समझते हैं क्योंकि 89 प्रतिशत ने विकल्प 2 को चुना, इसके बाद 6 प्रतिशत ने विकल्प 3, 4 प्रतिशत ने विकल्प 1 और मात्र 1 प्रतिशत ने विकल्प 4 को चुना। विकल्प 2 का चुनाव यह सिद्ध करता कि प्रभावली में दिए गए प्रश्नों के उत्तर सार्थक हैं।

सारणी संख्या 8 जब किशोर और किशोरियाँ अपने चुनौतियों से डर जाते हैं तब वह आत्महत्या का प्रयास करते हैं

विकल्प	मत	संख्या	%	मध्यमान	मानक विचलन
1	हाँ	30	6	0.4	0.8
2	नहीं	100	20	0.3	1.4
3	कभी - कभी	190	38	0.8	0.9
4	पता नहीं	180	36	1.4	1.2
5	कुल	500	100.0		



ग्राफ संख्या 8 जब किशोर और किशोरियाँ अपने चुनौतियों से डर जाते हैं तब वह आत्महत्या का प्रयास करते हैं

उपरोक्त सारणी 8 एवं ग्राफ 8 से स्पष्ट है कि विकल्प 1 में 6 प्रतिशत, विकल्प 2 में 20 प्रतिशत, विकल्प 3 में 38 प्रतिशत एवं विकल्प 4 में 36 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने उत्तर दिए। विकल्प 3 को सर्वाधिक उत्तरदाताओं ने चुना है। जिसका मध्यमान 0.8 तथा मानक विचलन 0.9 है।

निष्कर्ष और सुझाव

अधिकतम लोगों का मानना है कि चुनौतियों से मनोशारीरिक संतुलन पूर्णरूप से बिगड़ जाता है। जिसके कारण चुनौतियों का स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। किशोरों की तुलना में किशोरियाँ ज्यादा संवेदनशील होती हैं। किशोरावस्था में क्रोध का कारण कार्य में बाधा डालना है। किशोर और किशोरियों की प्रसन्नता के लिए संयुक्त परिवार सबसे ज्यादा उपयुक्त होता है, जब किशोरावस्था में डिप्रेशन आता है तब किशोर और किशोरियों आत्मविश्वास की कमी महसूस करते हैं ऐसे में संयुक्त परिवार बहुत ही सहायक होते हैं। किशोरावस्था में किशोर और किशोरियों अपनी-अपनी चुनौतियों को नहीं समझते हैं और अपने चुनौतियों से डर जाते हैं तब वह आत्महत्या का प्रयास करते हैं। किशोरावस्था चूंकि एक उथल-पुथल की अवस्था होती है और अधिकतर किशोर भ्रम की अवस्था में रहते हैं इसलिए उनकी ठीक तरह से मार्गदर्शन होना अति अनिवार्य है। अन्यथा वहीं कई बार उनकी उर्जा का सही प्रयोग नहीं हो पाता है। उनके भीतर जो योग्यताएँ, क्षमताएँ, रुचियाँ, अभिरूचितयाँ होती हैं अगर उनका परस्पर विकास न किया जाय और उन्हें ठीक मार्गदर्शन न दिया जाए तो समाज और देश के लिए एक चुनौती हो सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. इलियट, (2000) एजुकेशनल साइकोलॉजीइफेक्टिव टीचिंग :, एफेक्टिव लर्निंग, थर्ड इ डी न्यूयॉर्क-मैकग्रा : / हिल हुमैनिटीज़ / सोशल साइंसेजलैंग्वेज।

2. गेब्रियल, एल., टिज़ो, जेड., जेम्स, एच., क्रोनिन-डेविस, जे., बीथम, टी., कॉर्बली, ए., हिल, एस. (2018), "गिव मी सम स्पेस" एक्सप्लोरिंग यूथ टू पैरेंट अग्रेसन एंड वायलेंसा जर्नल ऑफ़ फैमिली वायलेंस , 33 (2), 161-69।
3. स्ट्रॉस और कैंटर , (1994) कॉर्पोरल पनिशमेंट ऑफ़ अडोलसेंट्स बाई पैरेंट्स ए रिस्क फैक्टर इन द एपिडमाइलोजी ऑफ़ डेप्रेसन, सुसाइड एलकोहॉल एब्यूज , चाइल्ड एब्यूज एंड वाइफ बीटिंग , 29 (115) , 543-61.
4. चोई, हे और हराची , (2008) इण्टरजनरेसनल कल्चर डिसअनेनस , पैरेंट-चाइल्ड कनफ्लिक्ट एंड बॉन्डिंग , एंड युथ प्रॉब्लम बेहैवियर्स अमंग विटामिस एंड कम्बोडियन , इमिग्रेंट फैमिलीज़। जर्नल ऑफ़ यूथ एडोलस्क , 37(1), 85-96।
5. ड्यूश, एम. (1973) द रिजॉल्यूशन ऑफ़ कंफ्लिक्ट , कंस्ट्रक्टिव एंड डिस्ट्रक्टिव प्रोसेसेज येल यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यू हैवन <https://doi.org/10.1177/000276427301700206>.
6. वेमाउथ एट अल (2016) ए मेटा-एनालिसिस ऑफ़ पैरेंट्स एडोलेसेंट कॉन्फ्लिक्ट: डिसअग्रीमेंट, हॉस्टिलिटी एंड युथ मलाइजस्टमेंट। जर्नल ऑफ़ फैमिली थ्योरी एंड रिव्यू, 1(1)
7. गदल्लाह, एट अल (2016) पैरेंट-एडोलेसेंट कॉन्फ्लिक्ट्स एंड इट्स रिलेशन विथ डीयर स्कूल अचीवमेंट एंड सेल्फ-इस्टीम। असियट साइंटिफिक नर्सिंग जर्नल, 4 (9) दिसंबर।
8. सईदा सुलताना (2017) सोशल नेटवर्किंग साइट्स (एसएनएस) एंड फैमिली रिलेशनशिप: ए स्टडी ऑन यूथ्स ऑफ़ ढाका सिटी। आईओएसआर जर्नल ऑफ़ ह्यूमैनिटिज़ साइंसा 22(4), 46-52.
9. अग्रवाल, एट अल (2017) जनरेशन गैप: एन इमर्जिंग इश्यू ऑफ़ सोसाइटी। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इंजीनियरिंग टेक्नोलॉजी साइंस एंड रिसर्च 4 (9), 973-83।
10. वलीजादेह एट अल (2018) कंसर्नस ऑफ़ पैरेंट्स विथ ओर रेजिंग एडोलेसेंट चिल्ड्रन: ए क्वालिटेटिव स्टडी ऑफ़ ईरानीयन फैमिलीज़ जे केयरिंग साइंस.1;7(1):27-33।
11. गेब्रियल एट अल (2018) गिव मी सम स्पेस: एक्सप्लोरिंग यूथ टू पैरेंट अग्रेसन एंड वायलेंसा जर्नल ऑफ़ फैमिली वायलेंस, 33 (2), 161-69।
12. यू. हरिकृष्णन एंड ग्रेस लालहलुपुई साइलो (2019) "ए लिटरेचर रिव्यू ऑन हेल्थ अमंग स्कूल गोइंग एडोलेसेंट्स इन इंडिया", रेसा जे. फैमिली, कम्युनिटी एंड कंस्यूमर साइंसा, वॉल्यूम 7, इशू (2), पेज 13-15, जुलाई, 27 (2019)
13. स्वामी एट अल (2019) "प्रिवलेंस ऑफ़ हेल्थ रिस्क बेहवियर्स अमंग द स्कूल गोइंग एडोलेसेंट्स ऑफ़ ग्वालियर टाउनशिप", वॉल्यूम 6, नंबर -12 (2019)।
14. यू. हरिकृष्णन एंड ग्रेस लालहलुपुई साइलो (2020) "चैलेंजेज ऑफ़ स्कूल गोइंग एडोलेसेंट्स : परसेप्शन ऑफ़ पैरेंट्स एंड टीचर्स", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ साइंटिफिक रिसर्च, मल्टीडिसिप्लिनरी स्टडीज़, वॉल्यूम 6, इश्यूज-11, पीपी.12-15, नवंबर (2020).



15. जून वांग एट अल (2021) "द इम्पैक्ट ऑफ़ फैमिली सोसिओ इकनोमिक स्टेटस एंड पैरेंटिंग स्टाइल्स ऑन चिल्ड्रेन्स ऐकडेमिक ट्रेजेक्टरीज़:ए लॉगिटूडिनल स्टडी कंपेर्यारिंग माइग्रेंट एंड अर्बन चिल्ड्रेन इन चाइना फरवरी 2021, न्यू डिरेक्शंस फॉर चाइल्ड एंड एडोलसेंट", डेवलपमेंट 2021(176):81-102, डीओआई: 10.1002/cad.20394.
16. इकरा मुश्ताक एट अला (2021) "इंटर-पैरेंटल कॉन्फ्लिक्ट्स परसिस्टेंट इफेक्ट्स ऑन एडोलैसैंट्स साइकोलॉजिकल डिस्ट्रेस, एडजस्टमेंट इश्यूज़, एंड सुसाइडल आइडिएशन ड्यूरिंग द कोविड-19 लॉकडाउन", ओमेगा - जर्नल ऑफ़ डेथ एंड डाइंग। दिसंबर 2021। डीओआई: 10.1177/00302228211054316
17. खरे, शिखा. (2022) एडोलैसैंट्स प्रोब्लेम्स एंड सोलूशन्स (1), ए मल्टीडिस्कप्लिनरी इंटरनेशनल पियर रिव्युड/रेफ्रीड जर्नल, वॉल्यूम X, नंबर 1, आईएसएसएन 2319-7129, 2022
18. अलका महोबिया एंड सोनाली जी चौधरी (2022) "सोशल सिक्योरिटी मेजर्स ऑफ़ रिप्रोडक्टिव हेल्थ अमंग एडोलैसैंट्स इन इंडिया: ए नैरेटिव रिव्यु", क्यूरियसा 2022 अगस्त 29; 14(8):e28546। डीओआई: 10.7759/Cureus.28546। पीएमआईडी: 36185839; पीएमसीआईडी: पीएमसीआईडी: पीएमसी9517583